साहित्योत्सव
Festival of Letters
24 - 29 फ़रवरी 2020

दैनिक समाचार बुलेटिन

सोमवार, 24 फ़रवरी 2020

मन्नू भंडारी करेंगी अकादेमी प्रदर्शनी का उद्घाटन

साहित्योत्सव का शुभारंभ प्रतिवर्ष साहित्य अकादेमी प्रदर्शनी के उद्घाटन से होता है। इस प्रदर्शनी में अकादेमी द्वारा पिछले वर्ष आयोजित किए गए विभिन्न कार्यक्रमों/ पुस्तक प्रदर्शनियों/ प्रकाशनों/ सांस्कृतिक आदान-प्रदान आदि की चित्रमय झलकियाँ प्रस्तुत की जाती हैं। इस वर्ष अकादेमी प्रदर्शनी का उद्घाटन आज (24 फ़रवरी 2020) पूर्वाह्न 10.00 बजे प्रख्यात हिंदी कथाकार मन्नू भंडारी करेंगी। मन्नू भंडारी दिल्ली के मिरांडा हाउस में पढ़ाती थीं तथा विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन की प्रेमचंद सृजनपीठ की अध्यक्षा भी रहीं। आपके चार कहानी-संग्रह एवं नौ उपन्यास प्रकाशित हैं। आपने चार नाटकों की भी रचना की है। आपकी कहानी 'यही सच है' पर आधारित हिंदी फ़िल्म 'रजनीगंधा' को 1974 में फ़िल्म फेयर का सर्वश्रेष्ठ फिल्म पुरस्कार प्राप्त हुआ है। आप हिंदी अकादमी दिल्ली के शिखर सम्मान, भारतीय भाषा परिषद्, कोलकाता राजस्थानी संगीत नाटक अकादमी और उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान द्वारा पुरस्कृत हैं। आपको के.के. बिड़ला फ़ाउंडेशन द्वारा 'व्यास सम्मान' से भी सम्मानित किया गया है।

मन्नू भंडारी

पुरस्कार अर्पण समारोह 2019 गुलज़ार होंगे मुख्य अतिथि

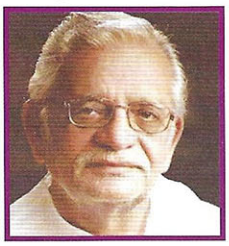

गुलज़ार

25 फ़रवरी को कमानी सभागार में आयोजित किए जा रहे साहित्य अकादेमी पुरस्कार 2019 अर्पण समारोह के मुख्य अतिथि इस बार प्रख्यात कवि, कथाकार, एवं फ़िल्म निर्देशक गुलज़ार होंगें। आपकी कुल अठारह पुस्तकें प्रकाशित हैं। आपकी प्रमुख कृतियों में *चाँद पुखराज का, रात पश्मीने की* और *पंद्रह पाँच पचहत्तर* नामक कविता-संग्रह; *रावी-प्रहार* और *धुआँ* नामक कहानी-संग्रह शामिल हैं। आपकी कृतियों के अनुवाद अन्य भाषाओं में भी प्रकाशित हैं। आपने 1970 के दशक में 'आँधी' और 'मौसम' जैसी फ़िल्मों तथा 1980 के दशक में टीवी धारावाहिक 'मिर्ज़ा ग़ालिब' का निर्देशन किया। आपको पद्मभूषण अलंकरण, साहित्य अकादेमी पुरस्कार, दादा साहब फ़ाल्के पुरस्कार, इक्कीस बार फ़िल्मफ़ेयर पुरस्कार, ग्रैमी पुरस्कार, पाँच बार राष्ट्रीय फ़िल्म पुरस्कार सहित कई अलंकरण प्राप्त हैं।

साहित्योत्सव 2020

साहित्य अकादेमी द्वारा प्रतिवर्ष आयोजित किया जाने वाला साहित्योत्सव इस वर्ष 24 फ़रवरी से 29 फ़रवरी 2020 तक आयोजित किया जा रहा है। साहित्योत्सव में देश के कोने-कोने से विभिन्न भारतीय भाषाओं का प्रतिनिधित्व करने वाले लगभग 250 लेखक और विद्वान विविध कार्यक्रमों में भागीदारी करेंगे। उत्सव का आरंभ अकादेमी की वर्षभर की गतिविधियों को प्रदर्शित करने वाली अकादेमी प्रदर्शनी से होगा, जिसका उद्घाटन प्रख्यात लेखिका मन्नू भंडारी, 24 फ़रवरी 2020 को पूर्वाह्न 10.30 बजे रवींद्र भवन परिसर, नई दिल्ली में करेंगी। इसी दिन तीन दिवसीय अखिल भारतीय आदिवासी लेखक सम्मिलन भी अपराह्न 2. 30 बजे प्रारंभ होगा, जिसका उद्घाटन वक्तव्य प्रतिष्ठित भाषा विज्ञानी अन्विता अब्बी देंगी। इस आदिवासी लेखक सम्मिलन में 38 आदिवासी समुदायों के लेखक-कवि भाग ले रहे हैं जिनमें से 15 आदिवासी समुदाय पहली बार अकादेमी के साहित्योत्सव में शामिल हुए हैं।

समारोह का मुख्य आकर्षण साहित्य अकादेमी पुरस्कार 2019 अर्पण समारोह कमानी सभागार, नई दिल्ली में 25 फ़रवरी 2020 को सायं 5.30 बजे होगा और उसके मुख्य अतिथि प्रतिष्ठित कवि, कथाकार एवं फ़िल्म निर्देशक गुलज़ार होंगे। 24 भारतीय भाषाओं के पुरस्कृत लेखक 25 फ़रवरी 2020 को पूर्वाह्न 10.00 बजे अपने रचनात्मक अनुभव साझा करेंगे। 27 फ़रवरी को बाङ्ला, गुजराती, हिंदी, मलयाळम् एवं उर्दू भाषा के लिए पुरस्कृत लेखक 'आमने-सामने' कार्यक्रम में प्रतिष्ठित साहित्यकारों/विद्वानों से बातचीत करेंगे।

साहित्योत्सव में प्रतिष्ठित संवत्सर व्याख्यान देश के पूर्व राष्ट्रपति श्री प्रणव मुखर्जी द्वारा 'अर्थशास्त्र की चिरस्थायी विरासत' विषय पर 26 फ़रवरी 2020 को सायं 6.00 बजे दिया जाएगा।

इस वर्ष त्रि-द्विवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का विषय 'प्रादेशिकता, पर्यावरण और साहित्य' है, जिसका उद्घाटन भाषण प्रख्यात कन्नड लेखक एवं साहित्य अकादेमी के महत्तर सदस्य एस.एल. भैरप्पा देंगे और बीज वक्तव्य प्रख्यात अंग्रेज़ी साहित्यकार अमित चौधुरी द्वारा दिया जाएगा। इसमें पूरे देश से लगभग 50 लेखक/विद्वान भाग ले रहे हैं। यह संगोष्ठी 27 फ़रवरी पूर्वाह्न 10 बजे से प्रारंभ होगी।

अन्य कार्यक्रमों में नई फ़सल (अखिल भारतीय युवा लेखक सम्मिलन) तथा पूर्वोत्तरी (उत्तर पूर्वी और उत्तर-क्षेत्रीय लेखक सम्मिलन) कार्यक्रम भी साहित्योत्सव के मुख्य आकर्षण होंगे। इसके अतिरिक्त नाट्य लेखन का वर्तमान परिदृश्य; अनुवाद कला : सांस्कृतिक दायित्व; मीडिया और साहित्य : सूचना एवं संवेदना तथा भारत में प्रकाशन की स्थिति विषयों पर परिचर्चाएँ आयोजित की गई हैं।

बच्चों को साहित्य से जोड़ने के लिए एक विशेष कार्यक्रम 'आओ कहानी बुनें' का आयोजन किया जा रहा है, जिसमें बच्चों के लिए कविता, कहानी लेखन एवं चित्रांकन प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया है। प्रख्यात बाल कथाकार बच्चों को अपनी कहानियाँ भी सुनाएँगे। यह कार्यक्रम 29 फ़रवरी को आयोजित किया गया है।

पिछले वर्ष की भाँति इस साहित्योत्सव में एक नया कार्यक्रम सम्मिलित किया है - 'एलजीबीटीक्यू कवि सम्मिलन', जो 27 फ़रवरी 2020 को अपराह्न 2.00 बजे होगा।

दिनांक 24, 27 एवं 28 फ़रवरी को सायं 6.00 बजे सांस्कृतिक कार्यक्रम भी आयोजित किए जा रहे हैं। 24 फ़रवरी 2020 को पारंपरिक लोक सांगीतिक नाटक श्रीकृष्ण पारिजात, लोकापुर कर्नाटक के कलाकारों द्वारा प्रस्तुत किया जाएगा। 27 फ़रवरी 2020 को भारतीय वाद्य यंत्रों की समेकित प्रस्तुति ताल वाद्य कचेरी, पेरावली जय भास्कर द्वारा की जाएगी। 28 फ़रवरी को सायं 6.00 बजे महमूद फ़ारूक़ी द्वारा दास्तानगोई प्रस्तुत की जाएगी।

इस बार अकादेमी की पुस्तक प्रदर्शनी पूर्वाह्न 10.00 बजे से सायं 7.00 बजे तक प्रतिदिन होगी और पुस्तकें बिक्री के लिए 20 प्रतिशत से 70 प्रतिशत तक की विशेष छूट पर उपलब्ध होंगी। सभी कार्यक्रम 35, फ़ीरोज़शाह मार्ग स्थित रवींद्र भवन में पूर्वाह्न 10.00 बजे से आयोजित होंगे।

आज के कार्यक्रम

अकादेमी प्रदर्शनी 2019

उद्घाटन

रवींद्र भवन परिसर,
पूर्वाह्न 10.00 बजे

अखिल भारतीय आदिवासी लेखक सम्मिलन

रवींद्र भवन परिसर, अपराह्न 2.30 बजे

सांस्कृतिक कार्यक्रम : पारंपरिक लोकसांगीतिक नाटक : श्रीकृष्ण पारिजात

रवींद्र भवन परिसर, सायं 6.00 बजे

साहित्य अकादेमी पुरस्कार 2019 के विजेता

जयश्री गोस्वामी महंत (जन्म : 1961) प्रख्यात असमिया कथाकार, कवयित्री और अनुवादक हैं। आप संसद सदस्य (राज्यसभा) भी रह चुकी हैं। अनुवाद-कार्यों सहित आपकी कुल 67 पुस्तकें प्रकाशित हैं। पुरस्कृत कृति *चाणक्य* ऐतिहासिक असमिया उपन्यास है, जो प्रतिष्ठित प्राचीन अर्थशास्त्री, राजनयिक, राज्य-प्रबंधन विशेषज्ञ और सम्राट के परामर्शदाता चाणक्य के जीवन के इर्द-गिर्द घूमता है।

चिन्मय गुहा (जन्म : 1958) प्रतिष्ठित बाङ्ला निबंधकार और अनुवादक हैं तथा फ्रांसीसी भाषा एवं साहित्य के विद्वान हैं। अनुवाद और संपादित कार्यों सहित आपकी 29 कृतियाँ प्रकाशित हैं। आपकी प्रमुख कृतियों में *हे अनंत नखत्रबीथि, ब्रिजिंग ईस्ट एंड वेस्ट : रवींद्रनाथ टैगोर एंड रोमां रोलां कॉरेस्पॉन्डेंस 1919-1940* तथा *चिलेकोठार उन्मादिनी* शामिल हैं। पुरस्कृत कृति *घुमेर दरजा ठेले* बाङ्ला निबंध-संग्रह है, जो विश्व साहित्य और कला पर केंद्रित है।

फुकन चंद्र बसुमतारी (जन्म : 1967) सुपरिचित बोडो कवि, आलोचक और निबंधकार हैं। आपकी प्रकाशित कृतियों में *नै बे लामाज्वाङ नों फैयोमोनबोला, आं आरो आंनि प्रलाप* (कविता-संग्रह), साहित्यिक समालोचना की तीन पुस्तकें, तिब्बत-बर्मी भाषाओं पर सात पुस्तकें, बोडो जनजाति पर एक विनिबंध, अनुवाद की दो पुस्तकें तथा विविध विषयों पर 300 से अधिक आलेख शामिल हैं। पुरस्कृत कृति *आखाइ आथुमनिफ्राय* बोडो राष्ट्रवाद, समकालीन सामाजिक संकट तथा प्रकृति और पारिस्थितिकी के प्रति प्रेम की खोज में लिखा गया बोडो कविता-संग्रह है।

(स्व.) ओम शर्मा 'जन्द्रयाड़ी' (जन्म : 1939 - निधन : 2019) प्रख्यात डोगरी लेखक थे। उन्हें अंग्रेज़ी, हिंदी, संस्कृत तथा उर्दू भाषाओं का भी ज्ञान था। वे हिंदी में भी लिखते थे। पुरस्कृत कृति *बंदरालता दर्पण* चौदह डोगरी लेखों का संग्रह है। संगृहीत लेख दूदू, रामनगर तथा उधमपुर के सांस्कृतिक, सामाजिक और धार्मिक परिवेश पर प्रकाश डालते हैं। पुस्तक के कुछ आलेख डोगरी भाषा और साहित्य के विकास में स्थानीय लेखकों के योगदान को भी आलोकित करते हैं तथा भाषा के विकास के लिए लेखक की गहरी चिंता को दर्शाते हैं।

शशि थरूर (जन्म : 1956) प्रख्यात अंग्रेज़ी लेखक, समालोचक तथा विचारक हैं। आपको हिंदी, मलयाळम् तथा फ्रांसीसी भाषाओं का भी ज्ञान है। आप 2009 से अब तक भारतीय संसद के (लोकसभा) सदस्य हैं। आपकी 19 मौलिक पुस्तकें प्रकाशित हैं। पुरस्कृत कृति *एन एरा ऑफ़ डार्कनेस* कृति ब्रिटिश शासन का एक मौलिक पुनर्मूल्यांकन प्रस्तुत करती है, जिससे पाठक औपनिवेशिक युग की संपूर्ण ऐतिहासिक और सांस्कृतिक विरासत को एक नई रोशनी में देखते हैं, जो सभ्याचारी शक्ति के रूप में ब्रिटिश साम्राज्य के पारंपरिक मिथकों को तोड़ती है। गंभीर शोध पर आधारित अपने मारक गद्य के माध्यम से लेखक ने यह दिखाया है कि तत्कालीन विशिष्ट भारतीय अंतर्संबंधों की उपलब्धियाँ बेहतर और अधिक हो सकती थीं, यदि वे संबंध संपूर्ण और स्वतंत्र होते।

रतिलाल बोरीसागर (जन्म : 1938) प्रख्यात गुजराती व्यंग्यकार, समालोचक और संपादक हैं। आप बच्चों के लिए भी लिखते हैं। आपकी महत्त्वपूर्ण कृतियों में *आनंदलोक, एन्जॉयग्राफ़ी, भज आनंदम, त्रण अठवाडिया अमेरिका-मा* (व्यंग्य-लेखन), *रमनभाई नीलकंठ, गुजराती प्रतिकाव्यो* (समालोचना), *महाभारत ना प्रसंगो* (बच्चों के लिए), *गुर्जर प्रहसन संचय, मा ए मा तथा अर्वाचीन गुजराती हास्य रचनाओ* (संपादित) शामिल हैं। पुरस्कृत कृति *मोजमां रे'वु रे!* गुजराती में 28 हास्य निबंधों का संग्रह है, जिनमें सूक्ष्म हास्य के साथ व्यक्तिगत और सामाजिक दैनंदिन अनुभवों का वर्णन है।

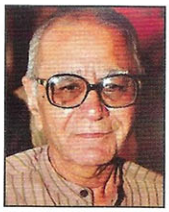

नंदकिशोर आचार्य (जन्म : 1944) हिंदी के प्रतिष्ठित कवि, नाटककार, आलोचक और अनुवादक हैं। संकलित-संपादित कृतियों के अलावा अनुवाद सहित आपकी 59 कृतियाँ प्रकाशित हैं। पुरस्कृत कृति *छीलते हुए अपने को* हिंदी कविताओं का संग्रह है, जिसमें भारतीय आधुनिकता की अभिव्यक्ति है तथा चेतना और रचना को निश्चित रूप से नई शैली में प्रस्तुत किया गया है। संगृहीत कविताएँ आत्मबोध, प्रेम और मानवीय ऊष्मा की निर्मल अभिव्यक्तियाँ हैं। ये कविताएँ सहृदयता से काव्य की विविध परंपराओं की बहुआयामी अंतर्धाराओं को आधुनिक संवेदनशीलता में एकीकृत करती हैं तथा जीवन की सादगी एवं समकालीन परिवेश की कई सच्चाइयों के साथ गहरे संबंध स्थापित करती हैं।

विजया (जन्म : 1942) प्रख्यात कन्नड लेखिका, नाटककार, पत्रकार तथा महिला सशक्तिकरण के लिए सक्रिय कार्यकर्ता हैं। संपादित और अनुवाद कार्यों सहित आपकी 45 से अधिक पुस्तकें प्रकाशित हैं। पुरस्कृत कृति *कुदि एसरू* पुरुष प्रधान समाज के विरुद्ध एक बहादुर, मज़बूत इरादोंवाली स्त्री के संघर्ष की आत्मकथा है। यह पुस्तक आत्म-शुद्धीकरण का जीवन-चित्र है, जिसे बड़ी ईमानदारी और गहरी संवेदनशीलता के साथ चित्रित किया गया है। यह लेखिका के तब तक के जीवन की पड़ताल करती है, जब तक कि वे रूढ़िवादी समाज द्वारा समस्त प्रकार के शारीरिक और मानसिक प्रताड़ना का सामना करने के बाद अकेले रहने का फ़ैसला नहीं कर लेती।

अब्दुल अहद हाजिनी (जन्म : 1948) प्रख्यात कश्मीरी कथाकार और अनुवादक हैं। आपको अंग्रेज़ी और उर्दू भाषाओं का भी ज्ञान है। आपके प्रकाशनों में अनूदित कृति *त्योथ पाज़र* शामिल है। पुरस्कृत कृति *अख याद अख क़यामत* कश्मीरी कहानी-संग्रह है। कश्मीरी लोकाचार की गहराई से जुड़ी इस कृति की कहानियाँ समग्र सामाजिक और सांस्कृतिक परिवेश को सफलतापूर्वक प्रतिबिंबित करती हैं। अपने एकल चरित्रचित्रण और चकित करनेवाली आख्यान-शैली के लिए उल्लेखनीय, इस कृति की कहानियाँ विशिष्ट संवेदनशीलता के साथ मानव संबंधों और मूल्यों के इर्द-गिर्द घूमती हैं।

निलबा अ. खांडेकर (जन्म : 1959) कोंकणी के प्रतिष्ठित कवि तथा नाटककार हैं। आपकी कुछ कहानियों और नाटकों के अलावा *वेद, सूर्यवंशी, अग्नि ब्लैक, दंडकारण्य* (कविता-संग्रह) एवं *वड्डा पैलिंची शांताताई* (नाटक) पुस्तकें प्रकाशित हैं। पुरस्कृत कृति *ध वर्डस्* कोंकणी कविता-संग्रह है, जो सामाजिक अन्याय और भेदभाव के विरुद्ध दृढ़ता से प्रतिरोध की आवाज़ उठाता है। कारण और कल्पना के सम्मिश्रण के लिए महत्त्वपूर्ण इन कविताओं की प्रकृति विचारोत्तेजक एवं सुगठित है। कविताओं में सामाजिक सरोकार के कई मुद्दों को सँजोने की प्रभावपूर्ण विविधता है तथा वे दृढ़ बौद्धिक पक्ष के साथ उनके बारे में मुखर हैं।

कुमार मनीष अरविन्द (जन्म : 1964) सुपरिचित मैथिली कवि और लेखक हैं। आपकी प्रकाशित कृतियों में *मिझायल सूर्यक नगर, निछाछ बताह भेल, जिनगीक ओरिआओन करैत* (कविता-संग्रह), *चियांकिराज बाबा* (कहानी-संग्रह), *शिखर पर जिजीविषा* (संस्मरण), *मिच्छामी दुक्कड़म्* (उपन्यास) नामक मैथिली पुस्तकों के अतिरिक्त 4 हिंदी पुस्तकें शामिल हैं। पुरस्कृत कृति *जिनगीक ओरिआओन करैत* मैथिली कविताओं का संग्रह है, जो व्यक्तिगत जीवन के संघर्ष, सामाजिक बुराइयों, प्रकृति माता के संरक्षण और मानव जाति तथा पृथ्वी के बीच विशिष्ट सामंजस्य की आवश्यकता तक कई विषयों को अपने में समाहित किए हुए है।

वी. मधुसूदनन् नायर (जन्म : 1949) प्रख्यात मलयाळम् कवि, लेखक और समालोचक हैं। आपने 14 वर्ष की आयु में गीत और कविताएँ लिखना प्रारंभ किया। आपकी कविताओं की 6, गद्य की 7 एवं बहुत-सी ऑडियो बुक प्रकाशित हैं। पुरस्कृत कृति *अच्छन पिरन्न वीदु* चौदह मलयाळम कविताओं का संग्रह है, जिनमें से तीन लंबी कविताएँ हैं। कविताएँ असाधारण रूप से अपनी मौलिक एवं सच्ची संवेदनशील अभिव्यक्ति के लिए उल्लेखनीय हैं, जो परंपरा और आधुनिकता के बीच एक कड़ी के रूप में कार्य करती हैं तथा आम बोल-चाल को रचनात्मकता की ऊँचाइयों तक ले जाती हैं।

बेरिल थांगा (लैशराम वीरमंगल सिंह) (जन्म : 1955) सुपरिचित मणिपुरी कवि और कथाकार हैं। आपके प्रकाशनों में *मामल* (लघु उपन्यास), *हेंजुनाहा* (वृत्तांत-कविता), *ईशीनी ऐगी पुंसिगि तथा मामी शम्जिल्लकलिबा खोंगुलसिंग* (उपन्यास) शामिल हैं। पुरस्कृत कृति *ऐ अमदी अदुडैगी ईथत्* मणिपुरी उपन्यास है, जिसमें एक बूढ़े आदमी के संस्मरण को व्यक्त किया गया है, जो प्राकृतिक सौंदर्य और सरल जीवन से सजे उस द्वीप-गाँव को याद करता है, जो अब पर्यावरण-क्षरण के कारण तबाह हो गया है।

अनुराधा पाटील (जन्म : 1953) मराठी की लब्धप्रतिष्ठ कवयित्री हैं। आपकी उल्लेखनीय कृतियों में *दिगंत, तरीही, दिवसेंदिवस, वाळूच्या पात्रन मांडलेला खेळ* (कविता-संग्रह) सहित कुछ कहानियाँ, समालोचनात्मक आलेख तथा अनुवाद शामिल हैं। पुरस्कृत कृति *कदाचित अजूनही* मराठी कविता-संग्रह है, जो इस ओर संकेत करता है कि कवि के अस्तित्व पर किस प्रकार इतिहास, यथार्थ और आधुनिकता की शक्तियों द्वारा हमला किया जाता है। अनुभव और रचनात्मकता की प्रक्रिया के विभिन्न चरणों के बीच अटूट रिश्ते की यात्रा को प्रदर्शित करते हुए संगृहीत कविताएँ अपनी दुनिया का विस्तार करती हैं।

सलोन कार्थक (जन्म : 1947) प्रख्यात नेपाली लेखक हैं। आपकी 8 प्रकाशित पुस्तकें हैं, जिनमें *समुद्र वारी समुद्र पारी, हस्तांतरण, गोलार्ध घुमनी का रंगहरू* उल्लेखनीय है। पुरस्कृत कृति *विश्व एउटा पल्लो गाउँ* मनमोहक नेपाली यात्रा-वृत्तांत है, जो लेखक के यात्रा संबंधी जुनून एवं अभिरुचियों की उदारता को उजागर करता है। लेखक के देश के और अंतरराष्ट्रीय यात्रा-वृत्तांतों का यह संग्रह वैश्विकता को स्थानीयता से जोड़ने का प्रयास है। लेखक की ज़बरदस्त जिज्ञासा, कुशाग्र बुद्धि और उर्वर कल्पना विश्व को अपने पड़ोसी गाँव-सा बना देती है।

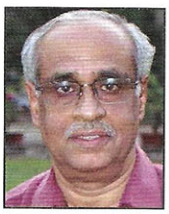

तरुणकान्ति मिश्र (जन्म : 1950) प्रख्यात ओड़िआ कथाकार हैं। आपकी 20 प्रकाशित पुस्तकें हैं, जिनमें *शरदः शतम, बहुब्रीहि, आकाश सेतु, वितंसा, निर्वाचित गल्प, रजनीगंधा* तथा *केहिं जणे एका* प्रमुख हैं। पुरस्कृत कृति *ास्वती* ओड़िआ में लिखित 14 कहानियों का संग्रह है, जो प्रेम, आशा, स्वप्न, निराशा, मृत्यु से लेकर मोक्ष तक विभिन्न विषयों से संबद्ध है। कहानियाँ न केवल अपनी तीव्रता और काव्यात्मक शैली, बल्कि अपने वास्तविक तथा रहस्यवादी कथ्य के नाते भी अनूठी हैं।

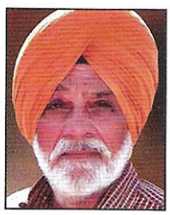

किरपाल कज़ाक (जन्म : 1943) प्रख्यात पंजाबी कथाकार, नाटककार और शोधकर्ता हैं। विभिन्न विधाओं में आपकी 34 पुस्तकें प्रकाशित हैं, जिनमें *काला इल्म, अंधा पुल, शर-ए-आम* (कहानी-संग्रह), *काल पत्तन* (उपन्यास), *कनधां तों बिना* (नाटक), *रंगमंच चिंतन, लोक धरा अते साहित : पाठ ते प्रसंग* (शोधग्रंथ), *साइकिल दी कहानी, खुल जा सिम सिम* (बाल साहित्य) प्रमुख हैं। पुरस्कृत कृति *अंतहीण* पंजाबी कहानी-संग्रह है, जिसकी कहानियाँ रोज़मर्रा की कृषि समस्याओं और समाज के वंचित वर्ग की जटिलताओं पर केंद्रित हैं।

रामस्वरूप किसान (जन्म : 1952) सुपरिचित राजस्थानी लेखक, कवि और अनुवादक हैं। आपकी प्रकाशित कृतियों में *हिवड़े उपजी पीड़ा, गाँव की गली-गली, सपने रो सपनो, हाडाखेड़ी, आ बैठ बात करां, तीखी धार, कूक्यो घणो कबीर* और एक अनुवाद *कति राति कनेर* शामिल हैं। पुरस्कृत कृति *बारीक बात* राजस्थानी कहानी-संग्रह है। संग्रह की कहानियाँ राजस्थानी साहित्य की विशिष्ट चेतना का प्रतिनिधित्व करते हुए लोक संस्कृति और आधुनिकता के द्वंद्व को चिह्नित करती हैं और नए साहित्यिक प्रतिमान स्थापित करने के लिए आगे बढ़ती हैं।

पेन्ना मधुसूदन (जन्म : 1966) प्रख्यात संस्कृत कवि, नाटककार, विद्वान और अनुवादक हैं। आपको अंग्रेज़ी, हिंदी, मराठी तथा तेलुगु भाषाओं का भी ज्ञान है। अनुवाद सहित आपकी 35 प्रकाशित कृतियाँ हैं। पुरस्कृत कृति *प्रज्ञाचाक्षुषम्* संस्कृत में लिखित एक महाकाव्य है, जिसमें महाराष्ट्र के अद्वितीय विद्वान संत-गुलाबराव महाराज (1881-1915) के जीवन और आध्यात्मिक दर्शन को चित्रित गया है। संत नेत्रहीन थे तथा अपने छोटे से जीवन काल में उन्होंने व्याकरण, तर्क, कविता, छन्दशास्त्र, चिकित्सा, लिपियों, दर्शन, संगीत, लोककथाओं, शिक्षा पर गहन साधना की।

काली चरण हेम्ब्रम (जन्म : 1960) प्रख्यात संताली कथाकार हैं। आप द्वारा लिखित पुस्तक *सिरजन् काहेद* के अलावा आपने कई साहित्यिक पत्रिकाओं जैसे - *सारजम् बाहा, संधायनी, जाहोरांगो* आदि के लिए नियमित रूप से आलेख लिखे हैं। पुरस्कृत कृति *सिसिरजाली* सरल, जीवंत भाषा और अभिनव कथा तकनीक के माध्यम से संताली समुदाय के सामाजिक स्तर से संबंधित संतालियों के सामाजिक, सांस्कृतिक तथा धार्मिक जीवन का विविध स्तरीय चित्रण करनेवाला कहानी-संग्रह है।

ईश्वर मूरजाणी (जन्म : 1942) प्रख्यात सिंधी कथाकार हैं। अबतक आपके 9 कहानी-संग्रह, 2 उपन्यास तथा 1 कहानी-संग्रह का अनुवाद प्रकाशित हुए हैं। आपकी प्रकाशित कृतियों में *ज़हिरू, पहाड़, गर्दिश, झिकिंयूं* और सिंधी कहानी शामिल हैं। पुरस्कृत कृति *जीजल* सिंधी कहानी-संग्रह है, जो पर्यावरण के सरोकार, प्रकृति के प्रति प्रेम तथा उच्च संवेदनशीलता के साथ मानव संबंधों की अभिनव अंतर्दृष्टि को अभिव्यक्त करता है।

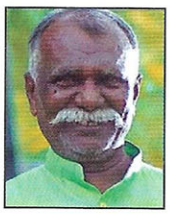

चो. धर्मन (जन्म : 1953) प्रख्यात तमिळ कथाकार हैं। आपके 7 कहानी-संग्रह, 4 उपन्यास तथा 1 शोधग्रंथ प्रकाशित हैं। आपकी कुछ रचनाओं का अंग्रेज़ी, हिंदी तथा मलयाळम् भाषाओं में अनुवाद हुआ है। पुरस्कृत कृति *सूल* तमिळ उपन्यास है, जिसमें जल आपूर्ति के लिए स्थानीय निकाय कनमै—पर निर्भर उरुलैकुडी गाँव में रहनेवाले लोगों के जीवन को दर्शाया गया है। उपन्यास में पर्यावरण के प्रति लेखक की गहरी चिंता नज़र आती है।

बंडि नारायण स्वामी (जन्म : 1952) प्रख्यात तेलुगु लेखक हैं। आपकी प्रकाशित कृतियों में *गद्दलाडतंडई, मीराज्यं मीरेलंडि, रेंडू कलाल देशं* (उपन्यास), *वीरगुल्लु, चम्की दंड, सूद्र पादं* (कहानी-संग्रह) शामिल हैं। पुरस्कृत कृति *ात्पभूमि* तेलुगु में लिखित एक ऐतिहासिक उपन्यास है, जिसमें आंध्र प्रदेश के 18वीं सदी के अनंतपुरम ज़िले के सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक लोकाचार को दर्शाया गया है। उपन्यास में 18वीं शताब्दी के ग्रामीण उथल-पुथल, विशेष रूप से दलित लोगों के जीवन को चित्रित किया गया है।

शाफ़े क़िदवई (जन्म : 1960) प्रख्यात उर्दू समालोचक और अनुवादक हैं। उर्दू में आपकी प्रमुख कृतियाँ *फ़िक्शन मुतालेअत मा'बाद-ए-ज़दीद तनाज़ुर, मीआजी, ख़बर निगारी* तथा अंग्रेज़ी में *उर्दू लिटरेचर एंड जर्नलिज़्म : क्रिटिकल पर्सपेक्टिव, द रोल ऑफ़ मौलाना आज़ाद्स अलहिलाल इन नेशनल अवेकनिंग* तथा *सिमेंटिंग एथिक्स विद मॉडर्निज़्म : एन असेसमेंट ऑफ़ सर सय्यद्स पीरियोडिकल्स* हैं। पुरस्कृत कृति *सवानेह सर सय्यद : एक बाज़दीद* उर्दू में लिखित एक उत्कृष्ट आलोचना ग्रंथ है, जो उन्नीसवीं सदी के ब्रिटिश भारत के प्रतिष्ठित इस्लामिक सुधारवादी विद्वान, दार्शनिक सर सय्यद अहमद ख़ान की अंग्रेज़ी, उर्दू तथा अन्य क्षेत्रीय भाषाओं की सभी आत्मकथाओं का विश्लेषण प्रस्तुत करता है।

साहित्योत्सव 2020 में पुस्तक खरीद पर 75% तक की विशेष छूट

• पत्रिकाओं के ग्राहक बनने पर 25% की छूट

साहित्योत्सव का मुख्य आकर्षण हमेशा इसकी पुस्तक प्रदर्शनी एवं बिक्री होती है। इस बार पुस्तक प्रेमियों के लिए पुस्तकों की खरीद पर 75% तक की विशेष छूट दी जा रही है। इतना ही नहीं साहित्य अकादेमी द्वारा प्रकाशित तीनों पत्रिकाओं के ग्राहक बनने पर भी 25% तक की आकर्षक रियायत दी जा रही है। ज्ञात हो कि साहित्य अकादेमी देश की प्रमुख प्रकाशक संस्था है और 24 भारतीय भाषाओं के अतिरिक्त कई आदिवासी भाषाओं का साहित्य भी प्रकाशित करती है। प्रतिवर्ष लगभग 500 पुस्तकें प्रकाशित करने वाली अकादेमी अभी तक लगभग 7000 शीर्षक प्रकाशित कर चुकी है। अकादेमी अपने द्वारा पुरस्कृत पुस्तकों के अनुवाद सहित विभिन्न भाषाओं के महत्त्वपूर्ण लेखकों के रचना संचयन, विनिबंध, कालजयी साहित्य और प्रचुर मात्रा में बाल साहित्य भी प्रकाशित करती है।

पिछले वर्ष साहित्य अकादेमी ने हिंदी में आदिवासी कहानी-संचयन, हिमाचली कहानी-संचयन, गिरिजा कुमार माथुर रचना-संचयन, राधाचरण गोस्वामी रचना-संचयन, रामविलास शर्मा रचना-संचयन, प्रतिनिधि बाल कविता-संचयन एवं हिंदी अनुवाद विमर्श (दो खंड) जैसी कई महत्त्वपूर्ण पुस्तकें प्रकाशित की हैं।

साहित्योत्सव 2020 के कार्यक्रम

दिनांक	समय	कार्यक्रम	स्थान
24 फ़रवरी 2020	पूर्वाह्न 10.00 बजे	अकादेमी प्रदर्शनी 2019 उद्घाटन	रवींद्र भवन परिसर
24 फ़रवरी 2020	अपराह्न 2.30 बजे	अखिल भारतीय आदिवासी लेखक सम्मिलन	रवींद्र भवन परिसर
24 फ़रवरी 2020	सायं 6.00 बजे	सांस्कृतिक कार्यक्रम : पारंपरिक लोकसांगीतिक नाटक	रवींद्र भवन परिसर
25 फ़रवरी 2020	पूर्वाह्न 10.00 बजे	अखिल भारतीय आदिवासी लेखक सम्मिलन (जारी...)	रवींद्र भवन परिसर
25 फ़रवरी 2020	पूर्वाह्न 10.00 बजे	पूर्वोत्तरी (उत्तर–पूर्वी और उत्तर क्षेत्रीय लेखक सम्मिलन)	रवींद्र भवन परिसर
25 फ़रवरी 2020	पूर्वाह्न 11.00 बजे	पुरस्कार विजेताओं से मीडिया की बातचीत	रवींद्र भवन परिसर
25 फ़रवरी 2020	सायं 5.30 बजे	साहित्य अकादेमी पुरस्कार 2019 अर्पण समारोह	कमानी सभागार
26 फ़रवरी 2020	पूर्वाह्न 10.00 बजे	लेखक सम्मिलन (पुरस्कृत लेखक अपने सृजनात्मक अनुभव साझा करेंगे)	रवींद्र भवन परिसर
26 फ़रवरी 2020	पूर्वाह्न 10.00 बजे	अखिल भारतीय आदिवासी लेखक सम्मिलन (जारी...)	रवींद्र भवन परिसर
26 फ़रवरी 2020	अपराह्न 2.30 बजे	नाट्य लेखन का वर्तमान परिदृश्य (परिचर्चा)	रवींद्र भवन परिसर
26 फ़रवरी 2020	सायं 6.00 बजे	संवत्सर व्याख्यान (प्रख्यात विचारक एवं भारत के पूर्व राष्ट्रपति श्री प्रणव मुखर्जी द्वारा)	रवींद्र भवन परिसर
27 फ़रवरी 2020	पूर्वाह्न 10.00 बजे	आमने–सामने : कुछ पुरस्कृत लेखकों के साथ संवाद	रवींद्र भवन परिसर
27 फ़रवरी 2020	पूर्वाह्न 10.30 बजे	प्रादेशिकता, पर्यावरण और साहित्य (राष्ट्रीय संगोष्ठी)	साहित्य अकादेमी सभागार
27 फ़रवरी 2020	अपराह्न 2.00 बजे	अखिल भारतीय एलजीबीटीक्यू कवि सम्मिलन	रवींद्र भवन परिसर
27 फ़रवरी 2020	सायं 6.00 बजे	सांस्कृतिक कार्यक्रम : भारतीय वाद्य यंत्रों की समेकित प्रस्तुति	रवींद्र भवन परिसर
28 फ़रवरी 2020	पूर्वाह्न 10.00 बजे	प्रादेशिकता, पर्यावरण और साहित्य (राष्ट्रीय संगोष्ठी) (जारी)	साहित्य अकादेमी सभागार
28 फ़रवरी 2020	पूर्वाह्न 10.30 बजे	अनुवाद कला : सांस्कृतिक दायित्व (परिचर्चा)	रवींद्र भवन परिसर
28 फ़रवरी 2020	अपराह्न 2.30 बजे	मीडिया और साहित्य : सूचना एवं संवेदना (परिचर्चा)	रवींद्र भवन परिसर
28 फ़रवरी 2020	सायं 6.00 बजे	महमूद फ़ारूक़ी द्वारा दास्तानगोई	रवींद्र भवन परिसर
29 फ़रवरी 2020	पूर्वाह्न 10.00 बजे	प्रादेशिकता, पर्यावरण और साहित्य (राष्ट्रीय संगोष्ठी) (जारी)	साहित्य अकादेमी सभागार
29 फ़रवरी 2020	पूर्वाह्न 10.00 बजे	आओ कहानी बुनें : बाल गतिविधियाँ	रवींद्र भवन परिसर
29 फ़रवरी 2020	पूर्वाह्न 10.00 बजे	भारत में प्रकाशन की स्थिति (परिचर्चा)	रवींद्र भवन परिसर
29 फ़रवरी 2020	पूर्वाह्न 10.30 बजे	नई फ़सल (अखिल भारतीय युवा लेखक सम्मिलन)	रवींद्र भवन परिसर

साहित्य अकादेमी
रवींद्र भवन, 35, फ़ीरोज़शाह मार्ग, नई दिल्ली-110001
ईमेल : secretary@sahitya-akademi.gov.in
दूरभाष : 011-23386626/27/28, फ़ैक्स : 011-23382428
वेबसाइट : http://www.sahitya-akademi.gov.in